प्रस्तावना

विमर्श की दृष्टि से जनसंचार माध्यमों में पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। विगत वर्षो में आये क्रांतिकारी तकनीकि बदलावों ने सूचना प्रसारण को नयी गति प्रदान की है। कम से कम समय में अधिक से अधिक सूचनाओं के प्रसारण पर बल देने के कारण विमर्श के लिए समय कम पड़ जाता है। मुद्रित माध्यम होने के कारण पत्रिकाओं में विषय विमर्श के लिए व्यापक स्थान होता है। प्रारम्भ में पत्रिकाओं का मूल विषय साहित्य, राजनीती, समाज सुधार आदि थे। बढ़ते औद्योगिकीकरण ने जहाँ समाज में नयी प्रवृत्तियों को जन्म दिया, वही पत्रिकाओं में नए विषय भी संबोधित किये जाने लगे जैसे-मनोरंजन, वित्त, फैशन, खेल आदि।

बढ़ते ओद्योगिकीकरण के कारण बदलते परिवेश एवं जीवनशैली ने कई किस्म के रोगों को जन्म दिया है, तथा स्वास्थ्य विकारों में वृद्धि आई है। आर्थिक उन्नति के लिए भागदौड़ में उलझा हर व्यक्ति बीमारियों से दूर रहना चाहता है। इस स्थिति में स्वास्थ्य सम्बन्धी सुझावों,बीमारियों से बचने के नुस्खो, जीवनशैली सम्बन्धी तथा नैदानिक मनोविज्ञान का महत्व बेहद बढ़ जाता है। जनसामान्य में स्वस्थ जीवन जीने की इस कामना ने स्वास्थ्य संबधी विमर्श की आवश्यकता को जन्म दिया। इस आवश्यकता ने जनसंचार में स्वास्थ्य सम्बन्धी विमर्श का बड़ा बाज़ार तैयार किया। स्वास्थ्य पत्रिकाएँ इसी बाज़ार की देन हैं।

लोकप्रियता की होड़, मुनाफा कमाने की भूख तथा बाज़ार पर राज़ करने की लालसा ने ऐसी स्थितियां उत्पन्न कर दी हैं। जिनमे स्वास्थ्य पत्रिकाओं, जिनका मूल उद्देश्य स्वास्थ्य विमर्श होना था,का मूल उद्देश्य विचारधारात्मक न होकर व्यवसायिक होने लगा है। अपने हितों की पूर्ति के लिए स्वास्थ्य

पत्रिकाएं उसी पारंपरिक सोच का वहन करने लगी हैं। जिसके अनुसार पुरुषों का पुरुषत्व खोना ही समाज की सबसे बड़ी समस्या है। सामान्य व्याधियों पर बात करने के अलावा इन स्वास्थ्य पत्रिकाओं में पुरूषों की यौन समस्या जैसे-शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, वीर्य की कमी आदि पर प्रत्येक अंक में विस्तृत चर्चा की जाती है, तथा इनसे सम्बन्धित विज्ञापन स्वास्थ्य पत्रिकाओं के प्रथम प्रष्ठ से लेकर पिछले कवर तक प्रचुर मात्रा में पायें जाते हैं। माहिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं पर बात करने के लिए निकाले गये विशेषांको में भी पुरुषों में यौनशक्ति बढाने का भरपूर विज्ञापन मिलते हैं। स्वास्थ्य पत्रिकाओं के महिला विशेषांकों में महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं से ज्यादा उनके सौन्दर्य पर चर्चा की जाती है, कैसे सुंदर दिखे, लम्बे बालों के लिए क्या करे, चमकती दमकती त्वचा के लिए नुस्खे आदि पर बल देकर स्वास्थ्य पत्रिकाएँ समाज में बनी हुई इस पुरुषसत्तात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं, की महिलाओं का सौन्दर्य ही उनके बारे में चर्चा की एकमात्र विषयवस्तु है एवं सुंदर दिखना ही महिला जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। स्वास्थ्य पत्रिकाओं में किंचित स्थानों पर पूजा पाठ आदि कर्मकांड को अपनाने व इनके उचित तरीकों पर भी विशेष बल दिया जाता है जो की रोगों के वैज्ञानिक समाधान के विपरीत अंधविश्वास को बढ़ावा देते है।

साहित्य पुरावलोकन:

किसी भी विषय, समस्या पर शोध कार्य करने से पूर्व विषय सम्बंधित सामग्री का विवेचन तथा विश्लेषण साहित्य पुनरवलोकन कहलाता है।

1.आज के प्रश्न-अश्लीलता का हमला:,यह पुस्तक राजकिशोर जी द्वारा सम्पादित पुस्तक है। जिसमें राजकिशोर जी ने संजय कुमार सिंह, सुधीश पचौरी, जगदीश्वर चतुर्वेदी, वंदना भारतीय, प्रेम सिंह, मधु किश्वर, विमल कुमार, अरविन्द त्रिपाठी, आलोक पुराणिक, भारत डोगरा, मस्तराम कपूर, शम्भुनाथ, सत्येन्द्र रंजन, प्रियदर्शन आदि लेखको के लेखो का संकलन किया गया है।

इस पुस्तक में भारतीय समाज, सभ्यता, और संस्कृति में दिन प्रतिदिन गिरते सामाजिक मूल्यों पर विचार किया गया है। श्लील और अश्लील के उभरते नये नैतिक दायरों तथा भूम्डलीकरण के प्रभाव में बाज़ार की प्रलोभनकारी नीतियों पर चर्चा की गयी है। बाज़ार ने अपनी चमक धमक ने मानव मन, इच्छाओं और मानवीय शरीर को अपनी और आकर्षित किया और मर्यादाओं की सीमाए टूटने लगी। जिससे स्त्री और पुरुष कोई भी अछूता नही रहा। वैश्विक स्तर वाली होने वाली यौन क्रांति का सर्वाधिक लाभ पूंजीपति वर्ग को हुआ। उत्पादन के निर्माताओं और व्यापारियों द्वारा मानव शरीर जिसमे मुख्य रूप से स्त्री को ग्लैमर के नाम पर कभी नग्न तो अर्धनग्न अवस्था में खड़ा किया। और स्त्री पर एक बार फिर पितृसत्ता के नये नियम बांध दिया गया।

2**. स्त्री देह के विमर्श-सुधीश पचौरी :** यह पुस्तक सुधीश पचौरी जी के उन लेखों का संकलन हैं जो समय समय पर हिदुस्तान, राष्ट्रीय सहारा, जनसत्ता, दैनिक नवज्योति आदि साप्ताहिक और दैनिक अखबारों में प्रकाशित होते रहे हैं।

इन लेखों का केंद्रीय विषय 'स्त्री' है। स्त्री की वर्तमान स्थिति तथा स्त्री स्वतंत्रता का बाजारीकरण जैसे गम्भीर विषयों पर पचौरी जी ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। परम्परा बनाम आधुनिकता के अखाड़े में भले ही स्त्री लड़ती हुई नजर आती हो किन्तु इस अखाड़े की पृष्ठभूमि पूंजीपतियों द्वारा निर्मित की गयी है, जिसमे वह अपनी इच्छानुसार एवं आवश्यकता अनुसार स्त्रियों को लड़ने का अवसर देता है। **पचौरी जी कहते हैं-'वृद्ध पूंजीवाद के मुक्त बाज़ार और मीडिया खासकर टी०वी ने स्त्री देह की नई परिभाषा बनायी है। जिसमें कभी चौंककर, तो कभी टकराकर स्त्रीत्ववादी विमर्श आगे बढ़ा है।"** स्त्री विमर्श का जन्म का जिस सत्ता के विरुद्ध हुआ था, आज वही विमर्श कही न कही आधुनिकता के आवरण में पुन: पुरुष सत्ता यानी पूंजीपतियों के लुभावनी प्रस्तावों के जाल में फसती जा रही है। टी० वी, मीडिया और पत्र-पत्रिकाओं के बाज़ार में स्त्री देह को एक बार खोला और बंद किया जा रहा है।

पॉपुलर कल्चर ने स्त्री सौन्दर्य के नये प्रतिमान गढ़े है, देह भाषा दी है, और लहंगा चोली के स्थान पर जो आज स्कर्ट टॉप दिया है, जो पूर्णरूप से लिंग भेद का सूचक है, जो पुरुषों द्वारा निर्मित किये गये है। जिनका निशाना स्त्रियों को बनाया गया है।

3.**स्त्री अस्मिता के प्रश्न-सुभाष सेतिया;** इस पुस्तक में सुभाष जी ने पत्र-पत्रिकाओं, टी० वी, रेडियो आदि पर स्त्रियों को दिखाई जाने वाली वर्तमान भूमिकाओं पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। इक्कीसवीं सदी को महिलाओं की सदी कहा जाता है। नई सदी के शुरुआत वर्ष 2001 की तत्कालीन सरकार ने '**महिला सशक्तिकरण**' वर्ष घोषित किया था। लेकिन क्या सही मायनों में यह सदी महिला सशक्तिकरण पायदान पर कदम भी रख पायी है ? आज महिलाए पुरुषों के समान और पुरुषों के साथ ही शिक्षा प्राप्त कर रही है। पुरुषों की तुलना में आगे भी बढ़ी है। किन्तु फिर भी स्त्री छवि निर्माण का कार्य आज भी पुरुष कर रहे है।

पत्र-पत्रिकाओं को जल्दी में लिखा का साहित्य कहा जाता है। साहित्य और पत्रिकाएं दोनों ही समाज को परिवर्तित करने का कार्य करती आई है और कर रही है। परिवर्तन की प्रक्रिया को गति देने में प्रचार माध्यम रेडियो, टेलीविज़न, विभिन्न पत्रिकाएं अहम भूमिका निभाते है, किन्तु स्त्री की समस्याओं, कठिनाइयों और स्थितियों का चित्रण करते समय परम्परागत दृष्टिकोण का ही सहारा लिया जाता है। पत्रिकाओं की विषय सामग्री तथा विज्ञापनों में स्त्री निहायत घरेलु, अन्याय को चुपचाप सहने वाली, रसोई और बच्चो को के पालने वाली, तथा सिमटी और सुहाग की अवधारणा में झुलसी, साज-श्रृंगार में लिपटी अबला के ही रूप चित्रित की जाती है।

4. ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ-सुधा सिंह; इस पुस्तक के अध्याय तेरह '**विज्ञापन की भाषा का स्त्रीवादी मूल्यांकन**' में विज्ञापन की बदली भाषा से परिचय करवाया गया है। भाषा भावों के आदान-प्रदान का सुगम साधन और ज्ञान का भण्डार कहा और माना जाता है, इसलिए भाषा किसी भी वस्तु के

प्रचार और उपयोगिता को व्यक्त करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जैसे-जैसे समय और स्थितियों में परिवर्तन हुआ वैसे-वैसे भाषा का स्वरुप भी बदलता गया। विभिन्न प्रचार माध्यमों की भाषा ने ही विज्ञापनों को देखने का दृष्टिकोण तय किया है। और हमारा ध्यान विज्ञापनों की तरफ तभी जाता है जब हमें उनकी आवश्यकता होती है। साथ ही यह हमें भविष्य की जरूरतों के लिए भी वह सूचनाएँ देते हैं, जो रहन सहन और दैनिक जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ती हैं। विज्ञापन की भाषा के बदलते रूप का उदाहरण सुधा सिंह इस प्रकार देती हैं- "19वीं सदी के आरंभ में मध्यम-वर्ग के जन्म ने विलास की छोटी-छोटी चीजों के विज्ञापन को अवसर दिया जिसके स्त्री-पुरुष और बच्चों की सेहत से जुड़ी चीजों के परिवार के नियोजन के, सौन्दर्य प्रसाधनों, लिप्टन के विज्ञापन हुआ करते थे। जो प्राय: विश्वमित्र, विशाल भारत,चाँद, माधुरी, सरस्वती आदि पत्रिकाओं में छपते थे जिनकी भाषा चित्रात्मक तो कभी प्रतीकात्मक होती थी। जैसे कंडोम के विज्ञापन में इसे परिवार नियोजन के लिए पुरुषों के लिए आवश्यक और उपयोगी माना गया है जिसे 'रबर की थैली' कहकर विज्ञापित किया गया। वहीं आज कंडोम का उपयोग और आवश्यकता सेक्स के प्रति बदला हुए दृष्टिकोण को व्यक्त करता है जो अब परिवार नियोजन के लिए नही अपितु सेक्स का ज्यादा देर तक आनंद लेने, सुरक्षित सेक्स और प्लेज़र लेने के लिए होता है।"

शोध की प्रासंगिकता :

किसी भी शोध का महत्व तब होता है जब उसका वर्तमान और भविष्य में कोई लाभ हो। आज लोग समय का अभाव होने का कारण अपनी स्वास्थ्य पर ध्यान नही दे पाते। जिसके कारण प्रत्येक व्यक्ति कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता हैं। ऐसे में स्वास्थ्य पत्रिकाएं अक्सर घरेलू उपचार आदि के माध्यम से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। घरेलु उपचार का सीधा सम्बन्ध स्त्रियों से है क्योंकि महिलायें ही रसोई का कार्य करती हैं। और इस प्रकार वे पूरे परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रखती हैं। लेकिन महिलाओं के स्वास्थ्य का सम्बन्ध किससे है, यह जानना अति आवश्यक है। इसीलिए महिला

स्वास्थ्य को प्रमुखता देना आज एक अहम मुद्दा और आवश्यकता बन गया है। जिसका अध्ययन मैं अपने शोध द्वारा करने का प्रयास करुँगी।

शोध प्रश्न:

1. क्या इन पत्रिकाओं में सभी उम्र की महिलाओं के स्वास्थ्य संबधी प्रश्न और समस्या के समाधान दिए जाते हैं ?
2. आज़ादी के नाम पर स्त्री देह का उत्पाद के साथ बाजारीकरण क्यों ?
3. स्वास्थ्य पत्रिकाओं में स्वास्थ्य के नाम पर स्त्री के परंपरागत रूप का चित्रण ही क्यों ?
4. क्या इन पत्रिकाओं में सभी वर्ग की महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं का चित्रण का समाधान देती है ?
5. क्या इन पत्रिकाओं में महिला को मानसिक एवं शारीरिक स्तर पर होने वाली व्याधियों के कारणों को रेखांकित करती है ?
6. स्वास्थ्य पत्रिकाओं में धार्मिक कर्मकांडों का विवरण क्यों?
7. महिला संगठनों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं में महिला स्वास्थ्य के किन मुद्दों को विशेषता दी जाती है ?

शोध का उद्देश्य:

1. मेरे शोध का उद्देश्य स्वास्थ्य पत्रिकाओं में चित्रित महिला स्वास्थ्य के मुद्दे को उठाना है।

2. स्वास्थ्य एक संवेदनशील मुद्दा है। भूमंडलीकरण के प्रभाव से आज स्वास्थ्य भी अछूता नही है बिमारी का भी बाजारीकरण हुआ है। इन पत्रिकाओं में महिला स्वास्थ्य के बाजारीकरण का अध्ययन शोध का उद्देश्य है।

3. पत्रिकाओं की विषय सामग्री एवं विज्ञापन में छिपी पुरुषसत्तात्मक मानसिकता एवं पुरातनपंथी विचारधारा का अध्ययन शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

4. लोगों को पत्रिकाओं में चित्रित महिला स्वास्थ्य और स्वास्थ्य समस्याओं से परिचित करना है।

5. महिला संगठनो द्वारा किये गये महिला स्वास्थ्य सम्बन्धी अभियान और बहसों की जानकारी देना शोध का उद्देश्य है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों सामग्री के संकलन को प्रविधि के रूप में 'अंतर्वस्तु विश्लेषण' विधि का सहारा लिया गया है

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए महिला संगठनों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं का संकलन संगठन से किया गया है जिसमें दिल्ली के 'सहेली' एवं 'जागोरी' महिला संगठन की पत्रिकाओं का संकलन किया गया है। साथ ही शोध में आवश्यक स्वास्थ्य पत्रिकाओं के लिए वर्ष 2016-17 की स्वास्थ्य पत्रिकाओं का संकलन किया गया है।

द्वितीयक आकड़ो में शोध में आवश्यक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का संकलन किया गया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मैंने तीन अध्यायों में विभाजित किया है। **प्रथम अध्याय** 'स्त्री स्वास्थ्य ; प्रमुख बहसें है। जिसमे मैंने स्वास्थ्य की परिभाषा बताते हुए स्वास्थ्य और लैंगिकता का सम्बन्ध तथा भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति चेतना पर स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद प्रमुख योजनाओं दिखाने का प्रयास किया है।

लघु शोध-प्रबन्ध का **द्वितीय अध्याय** 'महिला संगठनों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ' है द्वितीय अध्याय को दो उपाध्यायों में विभाजित किया गया है प्रथम उपअध्याय 'महिला संगठनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है जिसमे स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रता पश्चात महिला संगठनों की उत्पत्ति को संक्षिप्त में दिखाने का प्रयास किया है। द्वितीय उपअध्याय 'महिला संगठन की पत्रिका एवं न्यूज़लेटर में महिला स्वास्थ्य' है जिसमे न्यूज़लेटर एवं पत्रिकाओं का स्वरुप के साथ प्रकाशित सामग्री में स्त्री छवि एवं स्त्री स्वास्थ्य के मुद्दों का विश्लेषण किया है।

लघु शोध-प्रबंध का **तृतीय अध्याय** अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित स्वास्थ्य पत्रिकाएँ है। जिसे तीन उपअध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम उपअध्याय 'स्वास्थ्य पत्रिकाएँ एवं उनका स्वरुप है जिसमे पत्रिकाओं के प्रकशन वर्ष, टैग लाइन एवं स्थायी स्तम्भ इत्यादि बताये गये है। द्वितीय उपाध्याय 'स्वास्थ्य पत्रिकाओं में विज्ञापन विश्लेषण' है जिसमे विज्ञापन की परिभाषा एवं संक्षिप्त इतिहास को बताते हुए स्त्री और पुरुष को सम्बोधित करने वाले विज्ञापनों में नारी छवि का विश्लेषण किया है। तृतीय उपअध्याय 'स्वास्थ्य पत्रिकाओं का सामग्री विश्लेषण" है जिसमे पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों में स्त्री स्वास्थ्य एवं स्त्री छवियों का विश्लेषण किया है।

लघुशोध-प्रबंध के अंत में उपसंहार में सभी अध्यायों के विवरण एवं विश्लेषण के आधार से प्राप्त निष्कर्ष दिया गया है।

संदर्भ-ग्रन्थ लेखन – प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में संदर्भ सूची के लिए ए.पी.ए. (अमेरिकन सायकोलोजिकल एसोसिएशन) पद्धति का प्रयोग किया गया है साथ ही इसमें फूटनोट और उद्धरण (citation)का भी प्रयोग किया गया है।